Indian J. Soc & Pol. 03(02): 2016: 123-124 **ISSN 2348-0084 (P)**
ISSN 2455-2127 (O)

डॉ0 अम्बेडकर के आर्थिक विचार–एक दृष्टि

देवांश विक्रम सिंह[1]
[1]एम0 ए0 (अर्थशास्त्र), नेट, अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

डॉ0 अम्बेडकर भारतीय इतिहास के उन महापुरूषों में से एक है, जिनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। वह एक महान चिन्तक, दार्शनिक, विधिवेत्ता, राजनीतिक, इतिहासकार, मानवशास्त्री, वक्ता और प्रतिष्ठित विद्वान थे। भारतीय जनता उन्हें संविधान निर्माता और दलित वर्ग के मसीहा के रूप में ही जानती है। लेकिन बहुत कम लोग यह जानते हैं कि भारत – रत्न बाबा साहेब अम्बेडकर एक विश्वस्तरीय अर्थशास्त्री थे। डा0 अम्बेडकरं लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स से डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने वाले प्रथम भारतीय राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने अर्थशास्त्र का औपचारिक प्रशिक्षण लिया था और उनके द्वारा आर्थिक विषयों लिखे गये लेख दुनिया के प्रसिद्ध जनरल में प्रकाशित हुये । डॉ0 अम्बेडकर के अर्थशास्त्र के विषय में प्रवीणता को अमर्त्यसेन ने निम्न शब्दों में स्वीकार किया है। "डॉ0 अम्बेडकर अर्थशास्त्र में मेरे पिता हैं अर्थशास्त्र में इनका योगदान शानदार और अविस्मरणीय है।

KEYWORDS : *डॉ0 भीम राव अम्बेडकर, कृषि अर्थव्यवस्था, कराधान, औद्योगीकरण, मुद्रा विनिमय*

1. **कृषि क्षेत्र से सम्बन्धित समस्या** डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में मुख्य भूमिका अदा करता है । भारतीय कृषि की इस गंभीर समस्या के बहुत से नुकसान हैं जैसे जुताई और संसाधनों के कुशलतम दोहन में समस्या, अपर्याप्त आय, निम्न जीवन स्तर। डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार कृषि उत्पादन केवल जोत के आकार पर ही निर्भर नहीं करता बल्कि श्रम पुजी और अन्य आगतों पर भी निर्भर करता है। इसलिए यदि श्रम, पूंजी एवं अन्य आगत गुणवत्तापूर्ण एवं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है तो बड़ी जोत के बावजूद उत्पादन कम हो सकता हैं, वहीं दूसरी ओर छोटी जोत ज्यादा उत्पादक हो सकती है यदि संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। कृषि क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने निम्न सुझाव दिये:

1. सामूहिक खेती।
2. भूमि का समान वितरण।
3. बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण।
4. सरकार के द्वारा सामूहिक खेती के अन्तर्गत धन, बीज, और उर्वरक की व्यवस्था करना।
5. बेकार पड़ी भूमि को भूमिहीन मजदूरों के नाम करना।
6. मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी और निजी देनदारों द्वारा किसानों को दिये जाने वाले ऋणों पर नियंत्रण एवं निर्देशन करना।

2. **भारतीय मुद्रा की समस्याएं** अम्बेडकर ने 1923 में The Problem of Rupee its origin and Solution मे जान मेनार्ड कीन्स की इस विचारधारा का खण्डन किया कि भारत जैसे देशों को स्वर्ण विनिमय अपनाना चाहिये। अपने थीसिस में उन्होंने बताया कि स्वर्ण विनिमय मानक में स्थायित्व नहीं होता।(इकोनामिक एक्सप्रेस,10अप्रेल2016) भारत जैसे विकासशील देश स्वर्ण विनिमय मानक को वहन नहीं कर सकते और इसके अतिरिक्त यह व्यवस्था मुद्रास्फीति के जोखिम को बढ़ाता है। उन्होंने आंकड़ों के जरिये यह स्पष्ट किया कि भारतीय रूपया अपना मूल्य खो रहा है और इसलिये भारतीय रूपये की क्रयशक्ति घट रही है।उन्होंने सुझाव दिया कि राजकोषीय घाटा नियंत्रित किया जाना चाहिये और मुद्रा का चक्रयी प्रवाह होना चाहिये। विनिमय स्थिरता की तुलना में कीमत स्थिरता पर ज्यादा ध्यान दिया जाना चाहिये। अन्ततः उनकी इस पुस्तक ने भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना में मार्गदर्शन किया।

3. करारोपण पर दृष्टिकोण डॉ0 अम्बेडकर ने 1936 में स्वतंत्र मजदूर पार्टी के अपने घोषणापत्र में करारोपण पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने भू–राजस्व व्यवस्था और उससे होने वाली आय का विरोध किया और बताया कि इन करों का मुख्य रूप से समाज के गरीब वर्गों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। उनके अनुसार कर देय क्षमता के आधार पर आरोपित करना चाहिये। गरीबों पर कम और अमीरों पर अधिक कर होना चाहिये। कर छूट निश्चित मात्रा में प्रदान की जानी चाहिये। कर को लोगों के जीवन– स्तर के मानक को निम्न नही करना चाहिये।

4. **लोकतांत्रिक राज्य समाजवाद** डॉ0 अम्बेडकर का विश्वास था कि राज्य लोगों के आर्थिक विकास में मुख्य भूमिका निभा सकता है और इसी सोच के साथ डॉ0 अम्बेडकर ने संविधान कमेटी के समक्ष लोकतांत्रिक राज्य समाजवाद की धारणा को प्रस्तुत किया। इसके अन्तर्गत उन्होंने यह बताया कि सभी बुनियादी उद्योंगों का संचालन राज्य द्वारा किया जाना चाहिये। बीमा, कृषि जैसे क्षेत्रकों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये और उनका प्रबन्धन राज्य द्वारा किया

1: Corresponding Author

जाना चाहिये। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि भारत के तीव्र औद्योगिकीकरण के लिए लोकतांत्रिक समाजवाद आवश्यक है निजी उद्यम इसे नहीं कर सकता और यदि उसने यह किया ते इससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी जैसा कि निजी पूँजीवाद ने यूरोप में किया है और यह भारतीयों के लिये एक चेतावनी होनी चाहिये। (फ्रंटलाइन,वाल्यू19, अगस्त 2002)

5. **उद्योगों का राष्ट्रीयकरण** डॉ0 अम्बेडकर का यह मानना था कि भारत का तीव्र विकास बिना औद्योगिकीकरण के असंभव हैं उनके अनुसार बड़ी मात्रा में रोजगार सृजन के लिए भारी मात्रा में उपभोग होने वाले आवश्यक वस्तुओं को उत्पादित करना चाहिये। इससे कच्चे पदार्थों का कुशलतम ढंग से दोहन होगा। विदेशी निर्भरता कम होगी और श्रम की कुशलता में वृद्धि होगी और अन्ततः यह पूरे देश के सम्पूर्ण आर्थिक विकास को बढ़ावा देगी। इसलिये सरकार को विशालकाय स्तर पर उद्योगों को शुरू करने के लिए आगे आना चाहिये।

6. **मुक्त अर्थव्यवस्था के समर्थक** डॉ0 अम्बेडकर ने खुली अर्थात् मुक्त अर्थव्यवस्था का सुझाव दिया और इसके अन्तर्गत वैश्वीकरण उदारीकरण और निजीकरण के सिद्धांतों का समर्थन किया। वर्तमान समय में भारत सरकार इसी नीति पर चल रही है। मुक्त अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में डॉ0 अम्बेडकर एक शताब्दी आगे की सोच रखते थे। 7. **महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण** डॉ0 अम्बेडकर महिलाओं के सशक्तीकरण को लेकर हमेशा चिन्तित रहते थे। बाबा साहेब अम्बेडकर का मानना था कि किसी भी देश के आर्थिक विकास में महिलाओं का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान तब–तक असम्भव है जब–तक कि सामाजिक स्तर पर उन्हें समानता का दर्जा प्रदान न किया जाय। भारत में महिलाओं की खराब आर्थिक स्थिति भारत के आर्थिक विकास में बाधक है। इसलिए महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार करना और उन्हें समान अधिकार और व्यावसायिक स्वतंत्रता प्रदान करना आवश्यक है।

8. **मानवीय पूँजी–** डॉ0 अम्बेडकर के अनुसार भारत में मानवीय पूँजी का विचार निरर्थक है, जब तक कि गरीब और दलितों को समाज के अन्य वर्गों की तरह बराबरी और सम्मान प्रदान नहीं किया जाता। इस सम्दर्भ में डॉ0 अम्बेडकर का यह कथन कि एक गावं में दो गांव होते थे, एक उच्च जाति वाले हिन्दुओं का तथा दूसरा अछूतों का।(कारत 2008,पृ 218.219) उनका मानना था कि कोई भी समाज जातिगत भेदभाव के साथ विकास नहीं कर सकता। जातिगत स्तर पर भेदभाव किसी भी देश में मानवीय पूँजी के कुशल दोहन में सबसे बड़ी बाधा है।

9. **जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन**– डॉ0 अम्बेडकर का कहना था किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर तब–तक नियंत्रण नहीं किया जा सकता जब तक कि जनसंख्या को नियंत्रित न किया जाय उनका मानना था कि जनसंख्या के निरंतर बढ़ते रहने से सरकार की आय का एक बहुत बड़ा भाग बुनियादी सुविधाओं में ही खर्च होता है इसलिये डॉ0 अम्बेडकर जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन पर बहुत अधिक बल देते थे। डॉ0 अम्बेडकर के विचारों को ध्यान में रखते हुये ही भारत सरकार ने परिवार नियोजन की एक राष्ट्रीय नीति अपनायी।

10. **संविधान में वित्त आयोग की व्यवस्था** सन् 1951 में प्रथम वित्तीय आयोग अस्तित्व में आया। अनुच्छेद 280 के तहत यह व्यवस्था की गयी कि प्रत्येक पांच वर्ष पर केन्द्र और राज्यों के मध्य राजस्व वितरण के लिये वित्त आयोग का गठन किया जायेगा। वित्त आयोग की व्यवस्था इसलिये की गयी थी क्योंकि उस समय भारतीय संघ क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर असंतुलन की समस्या का सामना कर रहा था। डॉ0 नरेन्द्र जाधव के शब्दों में बहुत कम लोग यह जानते हैं कि संविधान में वित्त आयोग की व्यवस्था करने वाला कोई और नहीं बल्कि डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ही थे। इस संदर्भ में उनकी "The evolution of Provincial Finance in British India" 1923) बाद के सभी वित्त आयोगों का मार्गदर्शन करती है।

निष्कर्ष

इस प्रकार भारत रत्न डॉ0 अम्बेडकर के आर्थिक विचारों का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय समाज और विद्यानों ने सदैव उनके व्यक्तित्व का अधूरा वर्णन किया। डॉ0 अम्बेडकर के राजनैतिक विचारों को ही सदैव महत्व प्रदान किया गया जबकि भारतीय अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित मुख्य विषयों जैसे, कि भारतीय कृषि और उसकी समस्या, भारतीय मुद्रा का मूल्य, ईपीएफ, भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना में उनका श्रेय और संविधान में वित्त आयोग की व्यवस्था पर उनके विचार उन्हें एक श्रेष्ठ अर्थशास्त्री सिद्ध करते है। 21वीं शताब्दी के भारत में जरूरत यह है कि उनके राजनैतिक विचारों के साथ ही उनके आर्थिक विचारों का भी अध्ययन किया जाय और उनके विराट व्यवक्तित्व की व्याख्या एक वर्ग विशेष के नेता के बजाय एक राष्ट्र निर्माता के रूप में की जाये।

सन्दर्भ

कारत, शंकर, 2008 : दी लेटर्स आफ डॉ बाबा साहब अम्बेडकर, बम्बई, इन्द्राणी पब्लिकेशन्स

मुंगेरकर, बी एल : थाट्स आफ डॉ0 अम्बेडकर आन एग्रीकल्चर

संडे इकोनामिक एक्सप्रेस, 10 अप्रैल 2016

फ्रंटलाइन, वाल्यू 19 इश्यू अगस्त 2002

अम्बेडकर, माई फादर इन इकोनामिक्स, अमर्त्य सेन एटोसिटी न्यूज